Annual Report 2023-2024: The Serrendip

The Serrendip

President's Message

Dear Friends and Supporters,

As we reflect on the past year at THE SERRENDIP, we are filled with gratitude and pride for the remarkable progress we have made in our mission to support individuals with autism and their families. Our journey has been one of dedication, compassion, and unwavering commitment to fostering a more inclusive society where everyone can thrive, *while we are doing it, we pay a warm tribute to a dear friend, dedicated mother and our Executive member Mrs. Neelam Malhotra, whom we lost on July 10, 2023, it has been an irreparable loss for all of us, we hope and pray for her soul to rest in peace and keep sending her blessings.*

This year, we have expanded our reach through a variety of initiatives. We have signed an MOU with Mankunwar Bai Government College for Women, Jabalpur for educational programs for providing essential resources and training to educators and students, enabling them to create more supportive learning environments.

On World Autism Awareness Day of 2023, we held a programme on traditional sports of India and their significance for inclusive education of autistic individuals.

One of our most significant achievements has been the enhancement of our advocacy efforts. By working closely with Regional Abilympics, we supported Ms. Ashima Khatri's participation. Our efforts have led to increased awareness and understanding, paving the way for a more inclusive society. Our accomplishments this year would not have been possible without the unwavering support of our donors, partners, and volunteers. Your generosity and dedication have enabled us to make a tangible difference in the lives of individuals with autism and their families. We are deeply grateful for your trust and commitment to our cause.

As we look ahead, we are inspired by the potential for continued growth and impact. We remain steadfast in our mission to support, educate, and advocate for individuals with autism. Together, we can create a world where everyone has the opportunity to reach their full potential.

Thank you for being a part of our journey. Together, we are making a difference.

With gratitude,

Dr Navin Sharma

Remembering Respected Neelam Ma'am

Untimely demise of Mrs. Neelam Malhotra Ma'am on July 10, 2023, left us wondering about the uncertainty of life.

Neelam ma'am was an affectionate mom and a helpful human being. She was a guiding light for The Serrendip family as a Governing Body Member.

We will be missing her forever.

World Autism Awareness Day 2023- Inclusion through Traditional Games

"द सेरेंडिप" स्वलीनता से प्रभावित व्यक्तियों की कठिनाईयों को कम करने के लिए सरल, सुलभ, अनुकूलनीय व सस्ते उपायों को खोजकर उन्हें विकसित कर लोगों तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है, जिससे उनके विशिष्ट गुणों का समुचित उपयोग कर उन्हें एक गरिमामय जीवन व्यतीत करने का व्यापक अवसर प्राप्त हो।यह आत्मकेंद्रित और संबंधित विकार वाले व्यक्तियों की क्षमता को उजागर, दोहन और मजबूत करने के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहा है और उन्हें एक सम्मानजनक जीवन जीने में मदद कर रहा है।
संस्था का उद्देश्य सहयोग, सह-निर्माण व अभिसरण पर ज़ोर देना है। "द सेरेंडिप" का उद्देश्य स्वलीनता से प्रभावित व्यक्तियों के प्रति लोगों में जागरूकता लाकर समाज के नज़रिए को बदलने का है।

हर साल की तरह इस साल भी हम लोग 2 अप्रैल 2023 को ऑटिज्म अवेयरनेस डे, जिसे विश्व स्वलीनता जागरूकता दिवस भी कहा जाता है मना या

इस वर्ष आजादी के 75 वर्ष के महोत्सव के उपलक्ष में हमारा ऑर्गेनाइजेशन दि सरेन्डिप, जो ऑटिज्म से प्रभावित बच्चों के लिए काम करता है उनके लिए एक अनोखा अवसर उपलब्ध कराने की कोशिश करना चाहता है जो शारीरिक शक्ति और मनोबल को बढ़ावा देता है. साथ ही साथ ज्ञानार्जन के विभिन्न तरीकों को बढ़ावा देता है, यह सब संभव हो सकता है यदि हम अपने परंपरागत खेलों को पुनः अपने रोजमर्रा की जिंदगी में और शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग करें.

हमारे यह परंपरागत खेल सभी के द्वारा खेले जा सकते हैं और आसानी से इन्हें कम लागत में खेला जा सकता है.

इस वर्ष हम लोग जबलपुर के एक **ऑर्गेनाइजेशन जिसका नाम लाठी संघ** है जो कि पुराने खेलों पर जोर दे रहा है और उसे रिवाइव कर रहा है, हम उसे लेकर अपने ऑटिस्टिक बच्चों को एक वर्कशॉप के थ्रू दिखाया

World Autism Awareness Day 2023- Inclusion through Traditional Games

LAGORI

LATHI

GUTTE

GILLI-DANDA

CATAPULT

LANGADI

WAAD- 2023

रानीताल एरोड्रम मैदान में द सेरेंडिप सोसाइटी ने वर्ल्ड ऑटिज्म डे मनाया

जबलपुर, अटल प्रगति।
8839948794

रानीताल एरोड्रम मैदान में द सेरेंडिप सोसाइटी जबलपुरद्वारा ऑटिज्म से प्रभावित लोगों के विकास व समाज की मुख्यधारा से उन्हें जोड़ने के लिए हर वर्ष की तरह पांचवा वर्ल्ड ऑटिज्म डे मनाया गया।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक 160 बच्चों में से एक बच्चा ऑटिज्म से प्रभावित रहता है। ऑटिज्म की शुरुआत बच्चे के शैशव काल से होती है और इसका प्रभाव किशोरावस्था से लेकर वयस्क आयु तक बना रहता है।

दीप प्रज्वलन व स्वागत के पश्चात विद्यार्थियों द्वारा कोच श्री राम किशोर सोनी के मार्गदर्शन में परंपरागत खेलों में गुलेल प्रदर्शन, तीरंदाजी ,लाठी प्रदर्शन ,गिल्ली डंडा एवं रोलर स्केटिंग का प्रदर्शन किया गया इस कार्यक्रम में ऑटिज्म सोसायटी जबलपुर के अध्यक्ष डॉक्टर नवीन कुमार शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस संस्था का लक्ष्य ऑटिज्म से प्रभावित व्यक्तियों की कठिनाइयों को कम करने के लिए सरल ,सुलभ ,सस्ते उपायों को खोज कर, उन्हें विकसित कर लोगों तक पहुंचाना है जिससे लोग अपना गरिमामय जीवन व्यतीत कर सकें।

इस कार्यक्रम की सचिव श्रीमती कविता शर्मा ने कहां कि ऑटिज्म एक आजीवन रहने वाला गैर प्रगतिशील स्नायुविक विकार है जो आमतौर पर 3 साल की उम्र से पहले दिखाई देता है यह दूसरों से बोलचाल सांकेतिक संचार एवं सामाजिक संपर्क स्थापित करने में रुकावट उत्पन्न करता है ऐसे लोगों के विकारों के शुरुआती रोकथाम के लिए यह संस्था मदद करेगी और लोगों को जागरूक करने के लिए कार्यशाला चलाई जाएगी , उन्हें प्राथमिक स्तर पर शिक्षित किया जाएगा, उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर स्वतंत्र आजीविका की दिशा की ओर अग्रसर कराया जाएगा।

इस कार्यक्रम में उपाध्यक्ष डॉ राजीव खत्री ,डॉ मधुलिका मिश्रा, श्री एकांश सक्सेना, श्रीमती नीलम मल्होत्रा ,श्रीमती रोशनी सिंह उपस्थित थी । मंच का संचालन और आभार प्रदर्शन श्री राम किशोर सोनी द्वारा किया गया। हिंदी प्रवक्ता सुश्री शर्मिला ठाकुर द्वारा सराहनीय सहयोग प्रदान किया गया।

"Understanding Neurodiversity" - MOOC

Netaji Subhas Open University, Kolkata offered the 5- week MOOC (2nd cycle) on "Understanding Neurodiversity" through NSOU LMS (May-June 2023).
The Commonwealth Educational Media Centre for Asia (CEMCA) agreed to support this academic endeavor of the University.

For this, Mrs. Kavita Sharma, Hon. Secretary-The Serrendip/Special Educator was invited to extend her expertise as course instructor/ mentor of this 5-week MOOC? As the mentor, she was part of LIVE sessions (5No.) and had participated in the discussion forum (online) through LMS.

The course culminated on June 17th, 2023.

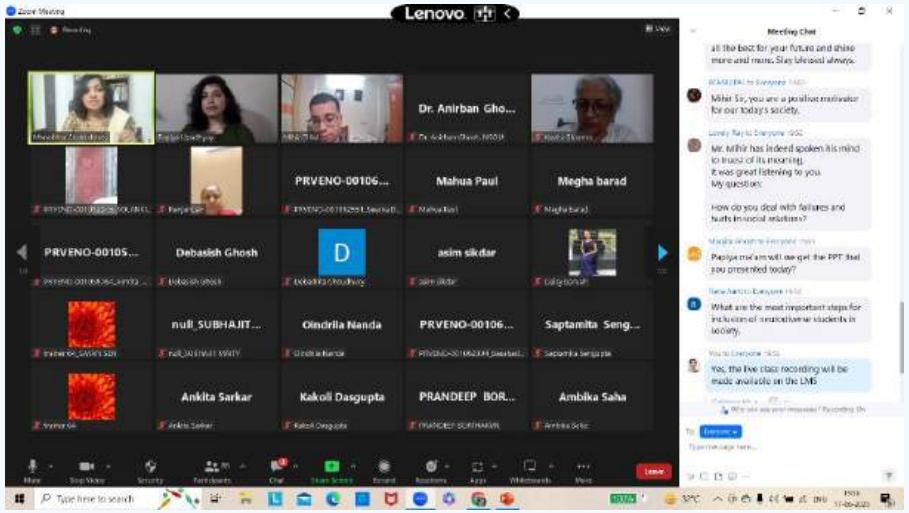

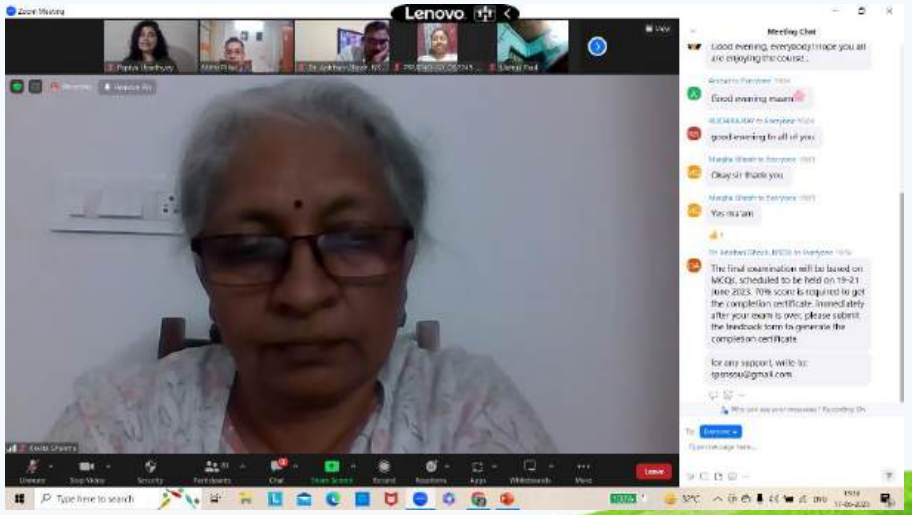

A collaborative effort was endeavored with Maan Kunwar Bai Govt. Autonomous College for Women, Jabalpur in August 2023 towards *creating a course on developing digital literacy aiming to enable employability* for the young students.

It is still in the pipe line and we have high hopes that it will start soon.

The key coordinator was Kavita Sharma.

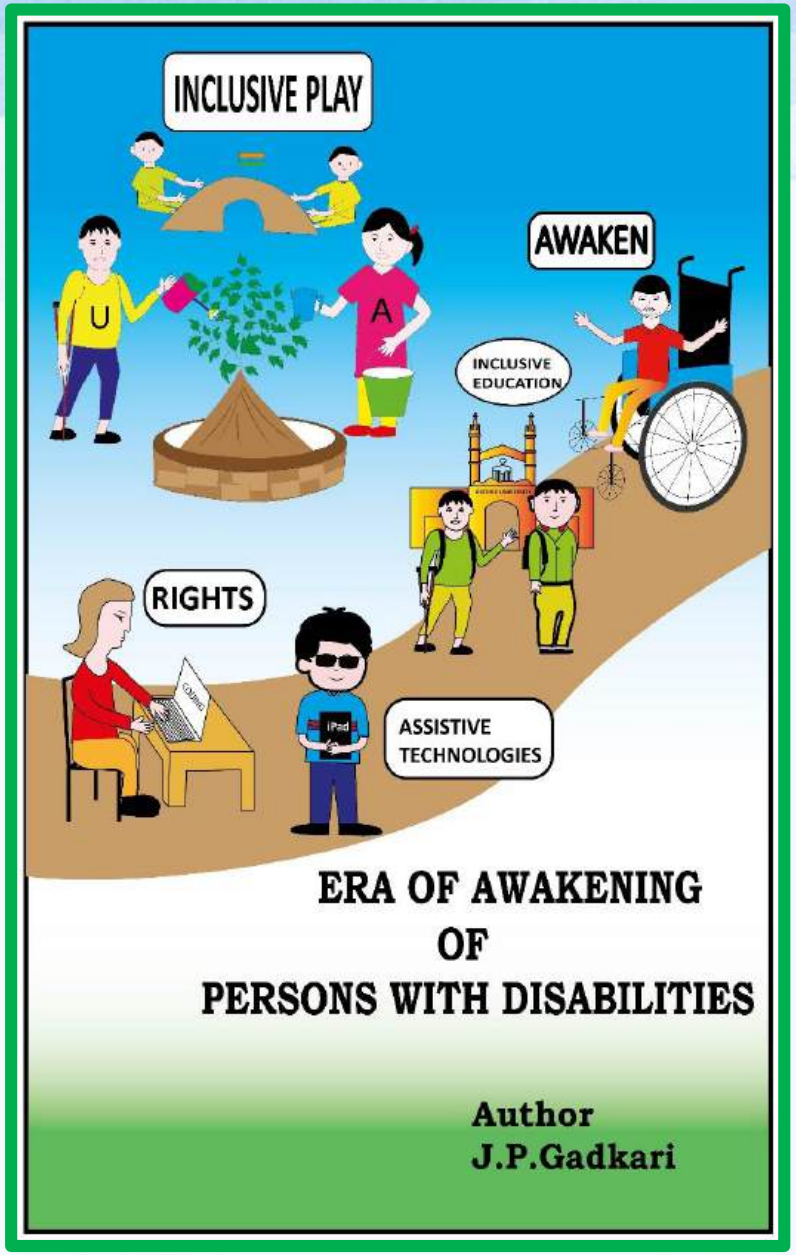

The Serrendip helped publish a book- **Era Of Awakening of Persons With Disabilities,** authored by Mr. J. P. Gadkari, who is the former President of a National Federation of Parents run organizations in India named PARIVAAR.
Mr. Gadkari, now 94, has been a father to Neil who is a man with IDD.

In this book, Mr. Gadkari has covered all the aspects of disabilities and it is a good book for all parents and professionals to refer to.
Cover of this book was created by Ujjwal Sharma, an adult with Autism, who is a freelance graphic designer at The Serrendip.

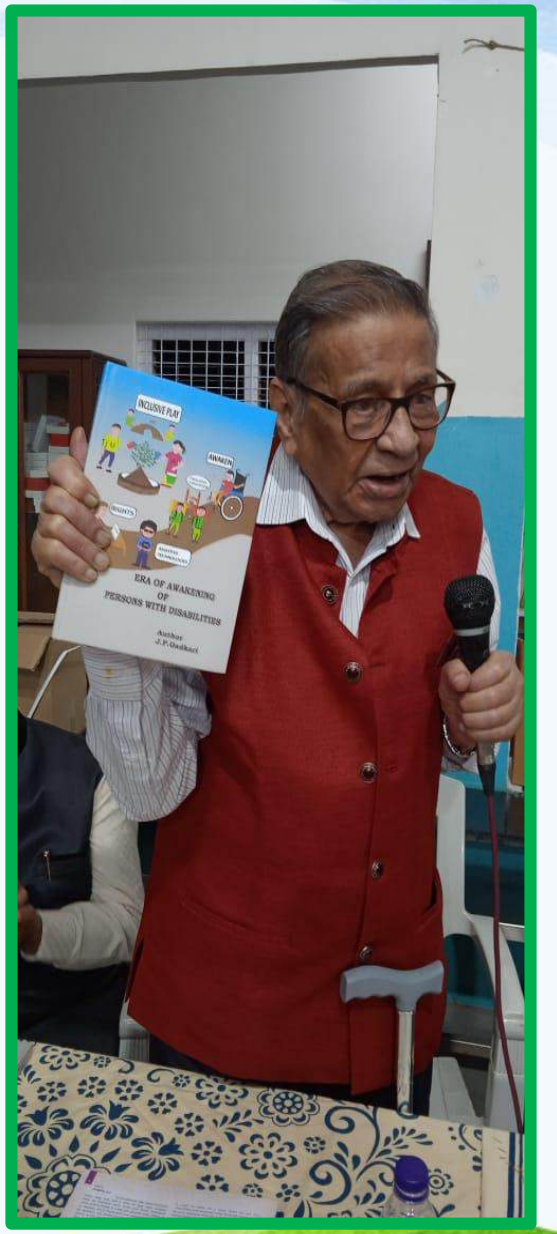

Participation of The Serrendip at the Regional Abilympics- Central Zone- February 24 and 25th 2024

रीजनल एबिलिम्पिक्स, सेन्ट्रल जोन, फरवरी 24 एवं 25, 2024 जबलपुर के कार्यक्रम में THE SERRENDIP की सक्रिय भागीदारी

दिव्यांगजनों के लिए अपनी प्रतिभा और क्षमताओं का प्रदर्शन करने के लिए एबिलिम्पिक्स व्यवहारिक कौशल प्रतियोगिताऐं आयोजित की जाती हैं । नेशनल एबिलिम्पिक्स एसांसियेशन आफ इण्डिया (NAAI) नई दिल्ली द्वारा गठित नोडल संगठनों द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

विविध विधाओं में प्रतियोगिताओं का आयोजन जिला, राज्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रिय स्तर पर सर्वश्रेष्ठप्रतिभा का चयन करने के लिए किया जाता है, जो हर चार वर्षो में एक बार आयोजित होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय एबिलिम्पिक्स प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व करते है जो इस बार वर्ष 2027 में प्रस्तावित है।

इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न संस्थानों, स्कूलों, गैर सरकारी संगठनों, कालेज या किसी भी संगठन और व्यक्तियों से उनकें आयु, वर्ग और कौशल श्रेणी के अनूसार उम्मीदवारों कों 3 अलग अलग आयु समूहों 10 – 17 वर्ष, 18–35 वर्ष तथा 35 वर्ष से अधिक के तहत पंजीकत किया जाता है। प्रथम समूह में 12 विधाऐं, द्वितीय समूह में 30 विधाऐं है और तीसरे समूह में 31 विधाऐं है। इसमें शैक्षणिक योग्यता महत्वपूर्ण नहीं है इसमें 19 प्रकार की विकलांगता के प्रतियोगी पंजीकरण करवा सकते हैं।

यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि THE SERRENDIP की अपनी भागीदारी इस पूरे अभियान में प्रारम्भ से ही रही है। उसमें अलग मुददो, विषयों, प्रक्रियाओं, औपचारिकताओं एवं मार्गदर्शन हेतु समय समय पर माह जुलाई 2023 से ही बैठको के आयोजन का दौर शुरू हुआ।

इन बैठको का आयोजन मध्यक्षेत्र एबिलिम्पिक्स के संरक्षक एवं मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. जीतेन्द्र जामदार, सामाजिक न्याय विभाग के स्थानीय अधिकारियों, पूर्व नि शक्त जन आयुक्त श्री बलदीप मेनी, रेड क्रास सोसाइटी के सचिव श्री आशीष दीक्षित एवं एबिलिम्पिक्स सेन्ट्रल जोन के सचिव श्री रजनीश अग्रवाल द्वारा जुलाई 2023 से ही लगातार किया गया।

प्रथम चरण में दिनाँक 7 अगस्त 2023 को प्रात 10 बजे से 2 बजे तक प्रतियोगिताओं का पंजीयन किया गया। इस अवसर पर THE SERRENDIP से प्रतियोगी श्री उज्जवल शर्मा एवं कु. आशिमा खत्री का पंजीयन किया गया तथा अपने घरों पर ही प्रशिक्षण एवं अभ्यास हेतु पहल कर प्रोत्साहित किया गया

रीजनल एबिलिम्पिक्स, सेन्ट्रल जोन के कार्यक्रम का जबलपुर में दिनाँक 24 एवं 25 फरवरी 2024 को आयोजित होना निर्धारित होने पर आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं कलेक्टर श्री दीपक सक्सेना एवं संरक्षक डा जीतेन्द्र जामदार व सामाजिक न्याय विभाग के अधिकारियों ने विभिन्न संस्थानों के प्रमुखों एवं समाज सेवियों के साथ दिनाँक 10, 02, 2024 को कलेक्टर के सभाकक्ष में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें समस्त व्यवस्थाओं एवं कार्यक्रम स्थल JNKVV परिसर जबलपुर पर निणर्य लिया गया जिसमें THE SERRENDIP का प्रतिनिधित्व रहा। चर्चा के दौरान बताया गया कि 15 विधाओं में प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन होगा जिसमें 171 प्रतियोगी मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ से भाग लेगें जिसमें 113 प्रतियोगी जबलपुर के रहेंगें। निश्चित ही इतनी बडी संख्या में जबलपुर से प्रतियोगियों के रहने एवं जबलपुर के प्रयासों से ही यह जबलपुर में किया जाना तय किया गया।

मध्यक्षेत्र एबिलिम्पिक्स के दो दिवसीय आयोजन का शुभारम्भ दिनाँक 24,02,2024 को मध्यप्रदेश के सामाजिक न्याय मंत्री माननीय श्री नारायण सिंह कुशवाहा जी के कर कमलों से हुआ। कार्यक्रम में NAAI के अध्यक्ष श्री कृष्ण कालरा, NAAI के महासचिव डा जीतेन्द्र अग्रवाल, कलेक्टर श्री दीपक सक्सेना, मध्यक्षेत्र एबिलिम्पिक्स के संरक्षक एवं मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष डा जीतेन्द्र जामदार, महापौर श्री जगत बहादुर सिंह, विधायक श्री अशोक रोहाणी, निशक्त जन आयुक्त म,प्र श्री संदीप रजक, श्री दीपांकर बैनर्जी, श्री बलदीप मैनी, डा प्रदीप दुबे तथा सामाजिक न्याय विभाग के पदाधिकारी गण उपस्थित रहे।

THE SERRENDIP गौखन्वित है कि रीजनल एबिलिम्पिक, सेन्ट्रल जोन जबलपुर में आयोजित प्रतिस्पर्धा में THE SERRENDIP से प्रतियोगी कु. आशिमा खत्री ने बडे ही उत्साह एवं लगन से ड्राईग– पेटिंग विधा में प्रशिक्षण लेकर प्रतियोगिता में भाग लिया और अच्छा प्रदर्शन किया। इसमें THE SERRENDIP की भागीदारी के साथ ही अभिभावक श्री नवीन खत्री एवं श्रीमति कविता खत्री की लगन सराहनीय है। दिनांक 25.02.2024 को आयोजित पुरस्कार वितरण के अवसर पर कु. आशिमा खत्री द्वारा मंच से आयोजकों एवं प्रतिभागियों पर अपनी अभिव्याक्ति प्रस्तुत की।

Participation of The Serrendip at the Regional Abilympics- Central Zone- February 24 and 25th 2024

THE SERRENDIP को जिला प्रशासन जबलपुर के सहयोग से आयोजिल मध्य क्षेत्र एबिलिम्पिक में सराहनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया साथ ही विभिन्न संस्थाओं व समाज सेवियों को सम्मानित कर आभार प्रकट किया गया। समन्वय सेवा केन्द्र में आयोजित सम्मान समारोह के अध्यक्ष एवं सम्पूर्ण आयोजन के सूत्रधार डॉ जितेन्द्र जामदार, समारोह के मुख्य अतिथि महामण्डलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानन्द गिरिजी, पूर्व निःशक्तजन आयुक्त श्री बलदीप मैनी रेड कास सोसाइटी के सचिव श्री आशीष दीक्षित,एबिलिम्पिक, सेन्ट्रल जोन के सचिव श्री रजनीश अग्रवाल, जन अभियाव परिषद के संभागीय समन्वयक श्री रवि बर्मन, जिला समन्वयक श्री प्रदीप तिवारी, THE SERRENDIP से डॉ नवीन शर्मा , श्रीमति कविता शर्मा व श्री एम. वेणु गोपाल नायडू व अन्य संस्थानों के प्रमुख एवं समाजसेवी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमति वर्षा सरावगी ने किया।

दो दिवसीय रीजनल एबिलिम्पिक्स का हुआ भव्य समापन

मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के दिव्यांगजनों ने स्पर्धाओं में अपने कौशल का किया प्रदर्शन

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर - डॉ मधूलिका मिश्रा त्रिपाठी

मैंने कई साल पहले एक मूवी देखी थी, "अंजली" ... उस वक़्त उस मूवी की लीड एक्ट्रेस जो कि एक बच्ची थी उसकी क्यूटनेस में ही खोई रही, मुझे उसकी स्टोरी उस वक़्त नही समझ आई थी। कुछ साल पहले कुछ और मूवी मुझे अंजली की याद दिला गई।"तारे ज़मीन पर", " माय नेम इज खान", "कोई मिल गया" और बर्फी ।
इनके किरदारों में एक समानता मिली ,सामाजिक व्यवहार और संवाद में दक्ष नही दिखे। इन मूवी के किरदारों बारे में खोज करने पर एक विशेष शब्द सामने आया "AUTISM" (ऑटिज़्म) .....
संवाद जीवन में बहुत विशेष भूमिका अदा करता है। ये ऐसा जरिया जिसके माध्यम से हम दूसरों से जुड़ते,अपनी इच्छाएँ, अपेक्षाएं सामने रखते ,और एहसास भी प्रकट करते।
ऑटिज़्म / ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसॉर्डर एक ऐसा शब्द या शब्दावली है ;जो क्षेत्रगत व्यवसायिक दक्ष लोगों के द्वारा उन बच्चों के लक्षणों के लिए प्रयोग में लाया जाता जिन्हें सामाजिक व्यवहार ,खेलने, संवाद में समस्याएं होती। जो अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने में भी सक्षम नही होते।
इसमे विभिन्न लक्षणों को भिन्नत करने के लिए S.P.D., A .S.D. ,ADHD, P.D.D. ,Asperger syndrome, Hyperlexia, और Semantic pragmatic disorder जैसे टर्म प्रयुक्त होते।

मैं अभिभावकों से इन लक्षणों पर ध्यान देने के लिए अनुरोध करती हूँ। खासकर #18 महीने से 3वर्ष तक की आयु के बच्चों में। यह समस्या समय पर उचित समाधान न मिलने पर गम्भीर रूप धारण कर सकती है। इसकी सचेत रहिए । इसलिए इन लक्षण पर बच्चे को परखें: -

- अर्थपूर्ण वाक्य बनाने में काफ़ी कठिनाई ,
- दूसरों द्वारा बोले गए वाक्यों को दोहराने की प्रवृत्ति,
- अपनी बात समझने के लिए संकेतों का ज्यादातर इस्तेमाल करना
- संचार के लिए भाषा ज्ञान कम या बिल्कुल न सीख पाना।
- अपनी ज़रूरतों, भावनाओं को समझा न पाना या प्रकट न कर पाना।
- प्रश्न को दोहराना ,कई बार सही उत्तर न दे पाना।
- अकेले खेलने की प्रवृत्ति , गोल गोल घूमने वाली वस्तुओं की ओर ज्यादा ध्यान देना।
- दिनचर्या में अचानक हुए बदलावों में स्वीकारता नहीं।
- अपने शरीर को आपके शरीर से या बेड या कोई भी दो वस्तुओं के बीच दबाव देने का प्रयास।
- अपने नाम को पुकारे जाने पर प्रतिक्रिया न देना।

- ध्वनि, गंध, स्वाद, देखना और सुनने जैसे सम्वेदी व्यवहार में असामान्य प्रतिक्रिया।
- अपने ही हांथों से खेलते रहना- पक्षी की तरह फड़फड़ाते रहना , ताली बजाना ।
- उनसे संवाद करते समय आखों के कोने से किसी अन्य ओर देखने।

आप जिसे गम्भीर समझें, ज़रूरी नहीं वो गम्भीर हो और आप जिसे मामूली समझे वो सामान्य ही हों।इसके लिए जरूरी है पूर्ण चिकित्सकीय परीक्षण । ताकि अगर वाकई समस्या है तो समय पर निदान और समाधान मिले।

इसके लिए शीघ्र हस्तक्षेप सबसे प्रभावी कदम है। लक्षणों के दिखते ही या संभावन होते ही जितनी जल्दी हो सके चिकित्सकीय परामर्श ले कर इस क्षेत्र के पेशेवरों ;जैसे : ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, स्पीच थेरेपिस्ट , स्पेशल एजुकेटर , क्लिनिकल सायकोलॉजिस्ट एवं डेवलपमेंटल पीडियाट्रिशन के सलाह और मार्गदर्शन से थेरेपी शुरू करना ही ऑटिज्म से यथासंभव रिकवरी दे सकता है।

पहली बार सन् 1938 में वियना युनिवर्सिटी के हास्पिटल में कार्यरत हैंस एस्परजर ने ऑटिज्म शब्द का इस्तेमाल किया था । एस्परजर उन दिनों ऑटिज्म स्प्रेक्ट्रम (ए.एस.डी.) के एक प्रकार पर खोज कर रहे थे । बाद में 1943 में जॉन हापकिन हास्पिटल के कॉनर लियो ने सर्वप्रथम 'आटिज्म ' को अपनी रिपोर्ट में वर्णित किया था कॉनर ने ग्यारह बच्चों में पाई गई एक जैसी व्यवहारिक समानताओं पर आधारित रिर्पोट तैयार की थी।

****

ऑटिज़्म एक न्यूरो डेवलपमेंटल डिसऑर्डर है जो दिमाग के सामान्य विकास में बाधा पहुँचाती है। इससे संचार, सामाजिक अंतःक्रिया, संज्ञान और व्यवहार पर असर पड़ता है। ऑटिज़्म को एक स्प्रेक्ट्रम विकार माना जाता है क्योंकि इसके लक्षण और विशेषताएँ कई मिलेजुले तरीक़ों से प्रकट होते हैं जो बच्चों को अलग अलग ढंग से प्रभावित करते हैं। कुछ बच्चों में गंभीर समस्या आ सकती है और उन्हें मदद की ज़रूरत रहती है जबकि कुछ ऐसे होते हैं जो हल्कीफुल्की मदद के साथ स्वतंत्र रूप से अपना कामकाज स्वयं ही कर पाते है।

ऑटिज़्म की सही सही वजह तो अब तक पता नहीं चली है लेकिन शोध बताते हैं कि ये आनुवंशिक और परिस्थितिजन्य या पर्यावरणजनित कारकों की मिलीजुली वजह से हो सकता है। पर्यावरणीय या परिस्थिति से जुड़ी वे विभिन्न स्थितियाँ हैं जो मस्तिष्क के विकास पर असर डालती है। ये जन्म के पहले या जन्म के फ़ौरन बाद उत्पन्न हो सकती हैं। ये भी देखा गया है कि बच्चे के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को नवजात दिनों में कोई नुकसान पहुँचने से भी ऑटिज़्म हो सकता है।

ऑटिज़्म एक जीवनपर्यंत की स्थिति है और चूंकि यह कोई बीमारी नहीं है अतः इसका कोई इलाज नहीं है। लेकिन सही थेरेपी और सही इंटरवेंशन से बच्चे को ज़रूरी कौशल सीखने में मदद मिल सकती है जिनसे वे अपनी ज़िंदगी को बेहतर बना सकते हैं। चूंकि 18 महीने की उम्र या उससे पहले ही बच्चे में ऑटिज़्म का पता चल सकता है लिहाज़ा बच्चे के बेहतर विकास के लिए काफ़ी पहले से मदद मुहैया कराई जा सकती है। हालांकि ऑटिज्म में कुछ विशेष लाक्षणिक समस्याओं को दवाइयों से नियंत्रित किया जा सकता है ,जिसमें हाइपरएक्टिवनेस, नींद की समस्या , एंजाइटी , स्वयं को चोट पहुंचाने जैसे लक्षण प्रमुख हैं।

इसके अलावा बच्चे के जन्म की प्लानिंग से लेकर बच्चे के होने के बाद तक कि स्थितियों में मां और बच्चे की बहुत सावधानी पूर्वक देखरेख अनिवार्य है। आजकल कई एडवांस टेस्ट जन्म के पहले भी भ्रूण में विभिन्न प्रकार की विकृतियों और अक्षमता की संभावनाओं को स्पष्ट कर देते हैं। इस स्थिति में सही चिकित्सकीय परामर्श से ही आगे बढ़ना चाहिए।

मातापिता के लिए महत्त्वपूर्ण नोटः-

ऐहतियाती क़दम के तौर पर, माता पिता बाल रोग विशेषज्ञों को ऐसे रूटीन विकास संबंधी टेस्ट करने के लिए कह सकते हैं जिनसे ये पता चल सके कि बच्चे का शारीरिक मानसिक और भाषाई विकास ठीक से हो रहा है या नहीं.
ऑटिज़्म की पहचान का कोई एक मेडिकल टेस्ट उपलब्ध नहीं है लेकिन कुछ विशिष्ट आकलन और जाँच, इस विकार के होने की पुष्टि कर सकती हैं ऐसी ही कुछ जाँचों में शामिल हैं -

- शारीरिक और तंत्रिका तंत्र के परीक्षण
- ऑटिज़्म डायगनोस्टिक इंटरव्यू- रिवाइज़्ड (एडीआई-आर)
- ऑटिज़्म डायगनोस्टिक ऑबज़र्वेशन शेड्यूल (एडीओएस)
- चाइल्डहुड ऑटिज़्म रेटिंग स्केल (सीएआरएस)
- जिलियम ऑटिज़्म रेटिंग स्केल
- परवेसिव डेवलेपमेंटल डिसऑर्डर स्क्रीनिंग टेस्ट
- *COMM DEAll* असेसमेंट
- इंडियन स्केल फॉर असेसमेंट ऑफ ऑटिज्म
- क्रोमोसोम असमान्यता को चेक करने के लिए जेनेटिक परीक्षण
- संचार, भाषा, बोलचाल, संचालन, पढ़ाई लिखाई में प्रदर्शन, संज्ञानात्मक कौशल से जुड़े टेस्ट आदि

****

किसी बच्चे में ऑटिज्म का पता चलता है कि तो उसके अभिभावकों को स्वयं के लिए यह दुनिया खत्म सी महसूस होने लगती है। भावनात्मक और मानसिक यंत्रणा का दौर होता है ये। फिर शुरू होता है इलाज , इंटरवेंशन और थेरेपी के लिए लगभग अंतहीन लगने वाले चक्कर। घर पर ढेर सारे समझौते ,अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों की बलि देते हुए कई अभिभावक इससे सामंजस्य बनाने की कोशिश करते हैं।
पारिवारिक सदस्यों की आदतों को भी बच्चे के हिसाब से बदला जाता है। अलग दिनचर्या अलग योजनाएं बनती है। इस तरह से एक अन्य बच्चे के मुकाबले ऑटिज़्म वाले बच्चे को पालना कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण होता है।

लेकिन अगर सही समय पर इसके बारे में जानकारी मिल सके तो इस स्थिति से निपटना अपेक्षाकृत सरल होगा।
इन हालात में, अभिभावक या देखरेख करने वाले व्यक्ति के तौर पर आप :-

*ऑटिज़्म के बारे में पढ़े और जानें पर ध्यान रखें हर बच्चा अलग है तो जरूरी नहीं कि नेट पर किसी अन्य के बारे में दी गई जानकारी और टिप्पणी आपके बच्चे पर भी लागू हों। नकारात्मक साहित्य से बचें। आप रेमेडीज/ समाधान की तरफ ध्यान दें।

बच्चे सहित परिवार में सभी दिनचर्या निश्चित करें ताकि बच्चे को अनावश्यक तनाव न हो ।उसे पूर्व आभास रहे कि आपका अलग कदम क्या होगा। स्थिति से अनभिज्ञ होना बच्चे की एंजाइटी बढ़ा सकता है और व्यवहारगत समस्याओं का कारण बन सकता है।

*बच्चे ,परिवार के सदस्यों और जरूरत पड़े तो स्वयं के लिए भी मनोचिकित्सक से काउंसलिंग लें। आप भी इंसान हैं ,भावनात्मक उथल पुथल आपको भी परेशान कर सकती है।

- एक विशेष जरूरत वाले बच्चे के लिए आपको भी भावनात्मक रूप से मदद और साझा करने की आवश्यकता होती है। ऐसे समूहों से जुड़े जिनमें इस स्थिति से गुजर रहे माता पिता शामिल हों। सब आपस मे जानकारी साझा करें, एक – दूसरे की मदद करें।

- आपके स्थान अपर थेरेपी की व्यवस्था न हो तो प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिस्सा लेकर गतिविधियों के बारे में सीख सकते हैं जिससे बच्चे के साथ काम करने में आपको मदद और मार्गदर्शन मिले।

- ये न सोचें कि बच्चा आपको सुन नहीं रहा और उससे बात करना बंद न करें।बल्कि लगातार उससे हर चीज ,हर घटना के बारे में बताएं। रास्ते से गुजरते समय भी आप लगभग कॉमेंट्री जैसी करते रहें। ये उसे दिमाग मे नए शब्द और घटनाओं के तारतम्य को सिखाएगा।

- प्रिटेंड प्ले, इमेजनरी प्ले भी सिखाए। एक ही खिलौने से अलग अलग तरह से खेलना सिखाएं। अलग अलग कॉन्सेप्ट दीजिये।

- शुरुआत में बच्चे की रुचि अनुसार सोलो गेम से शुरू करके धीरे धीरे समूह में खेलने वाले गेम की तरफ लाइये। इससे बच्चे अपनी बारी का इंतज़ार करने के अलावा नियम भी सीखने लगेंगे।

- बातचीत में वाक्य छोटे और सरल निर्देशों वाले रखें।ताकि बच्चे को समझना आसान हो।

- शुरुआत में वो बच्चे जिन्हें भाषा या संवाद में कठिनाई हो ,उनके लिए कम्युनिकेशन कार्ड बना कर रखें। इसके माध्यम से उन्हें अपनी बातें ,जरूरत साझा करना सिखाइये।
- आजकल AAC डिवाइस और ऐप्स को मदद से संचार के लिए कई साधन उपलब्ध हैं , जिसे बच्चे की क्षमता अनुसार चुन सकते हैं।

- बच्चों को मदद माँगने के तरीके सिखाइये।
- पहले बच्चे को समझाए फिर बोलने का प्रयास कराएँ। ताकि सही शब्द प्रयोग करना आए।

- छोटे से छोटे सफल प्रयास पर भेज बच्चे को बहुत उत्साहित कर उसे इनाम भी देना है। याद रखें ये इनाम हमेशा कोई भौतिक वस्तु न हो, बल्कि कई बार उसकी पसंदीदा गतिविधि या भाव भी हो।

- बच्चे को आप हमेशा #स्पून_फीडिंग(जरूरत से पहले ही पूर्ति) न कराएं। उसे प्रोत्साहित करिये अपनी जरूरत को प्रकट करने के लिए उसके बाद उसकी मदद करें। याद रखें आपको बच्चे को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाना है न की निर्भर ।

- बच्चे को कई तरह की शारीरिक गतिविधियों जैसे खेलकूद में संलग्न करें।इससे विशेष विधा में उनकी सक्षमता भी सामने आ सकती है ,साथ ही अधिक हाइपर बच्चों को शारीरिक रूप से थका कर शांत रखने में भी मदद मिलती है।

- आपका शारीरिक मानसिक बेहतर होना स्वास्थ बच्चे के लिए भी जरूरी है ,इसलिए खुद पर भी ध्यान दें।

सामाजिक व्यवहार के लिए :-

- बच्चे को घर व बाहर के लोगों से मिलाएं ।
- बच्चे को पार्क या किसी हॉबी क्लास में ले जाएं।
- दूसरों से संवाद के लिए प्रेरित करें। प्रॉम्प्टिंग कि स्थिति को हटाते जाएं। इसे फेडिंग कहते हैं।
- बच्चे के ऐसे व्यवहार जो बार बार दोहरा रहा हो,उसे नजरअंदाज न करें और उसे किसी भी प्रकार से व्यस्त करें ताकि उसका ध्यान उस एक गतिविधि से हटे।बच्चे को अकेलेपन की स्थिति में न छोड़े।
- बच्चे के गलत व्यवहार को नजरअंदाज न करें। आप उसे विभिन्न तरीकों से समझाने का प्रयास करें कि उसके द्वारा की गई गतिविधि ने आपको /अन्य को नुकसान पहुंचाया।गुस्से और दुख को दिखाने के लिए शारीरिक हावभाव के अलावा विजूअल कार्ड का इस्तेमाल करें।बच्चे की वीडियो या फ़ोटो(अवांछित व्यवहार के दौरान) लेकर रखें और समझाते समय इसे दिखाएं।
- बच्चे के साथ नज़र मिला कर बात करने की कोशिश करे,उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसके रुचि की वस्तु अपने चेहरे के पास रख बात करें।
- हर सही प्रयास के लिए प्रोत्साहित करना कभी न भूलें ।
- बच्चे का अधिक गुस्सा या अधिक चंचलता दिखे तो उसे शारीरिक व्यायाम ,खेल सम्बन्धी गतिविधि में लगाएं। इससे अलावा यदि उसकी गतिविधि स्वयं या अन्य को शारीरिक क्षति पहुंचाने के स्तर पर हों तो मनोचिकित्सक से सम्पर्क करें।

यहां पर विशेष बात यह है कि जब तक हम वास्तविकता को स्वीकार नहीं करेंगे तब तक हम समस्या का समाधान भी नहीं खोज पाएंगे।बच्चे की समस्या को नजरंदाज करते जाने या छुपाने से समस्या और बढ़ेगी और एक स्थिति के बाद इस पर कोई नियंत्रण नहीं रह पाएगा।
प्रकृति ने जब कोई भेदभाव नहीं रखा तो कहीं न कहीं हमारा भेदभाव पूर्ण व्यवहार प्रकृति की व्यवस्था के खिलाफ ही जाएगा।और प्रकृति जब विरोध करती है तो त्रासदियों को जन्म देती है। सम्हलकर, सोचकर, अपना कर, अनुकूल व्यवहार करें।

“समस्या होना जीवन का अंत नहीं होता, बल्कि समस्या होना जीवित होने का संकेत है, समाधान से उसे जीतना ही जीवन है”।

About the author-

Dr. Madhulika Mishra Tripathi has been associated with The Serrendip since 2020. It has been a wonderful association with her. She has exhibited her leadership abilities and a helpful nature to empower parents. We are proud to have her in our team.

An MOU with MKB, Govt. Autonomous College for Women

The Serrendip has been keen to begin teacher training programmes and various other skill development related programmes as a part of human development since its inception .
Connecting with the local organisations who are keen to get involved, has been a key endevour.

We have been able to make an MOU with the reputed Maan Kunwar Bai Autonomous Govt. Women's College, Jabalpur, MP for next five years- 2024-2029.

This will help us share our knowledge and resources to achieve the said objectives.

Other significant steps and achievements

On the occasion of World Disability Day December 3, 2023, Kavita Sharma received an award from the State Disability Commissioner, New Delhi in the category- Championing the Cause of Disability.

A big thanks to Adv. Shailja Sharma, our TAB member, for believing in my work and promoting unconditionally it to all who needed.
Thanks Air Cmdr Ranjan Mukherjee, SCPD- NCTD.
Since, there was a health emergency, Kavita could not attend the event in person and therefore her husband Dr. Navin Sharma received it.

Mr. M. Venugopal Naidu, a sincere parent, took charge of the head of the Working Committee of The Serrendip.

In the leadership of Mr. Ekansh Saxena, the head of the railway department was approached to add Autism as a disability in the concession certificate for travel of persons with Autism.

Dr. Divya Sharma was approached for the vacant position of the EC member, which she has kindly accepted

Mrs Roshani Singh had helped us connect to new organisations; the latter showed positive interest in getting involved.

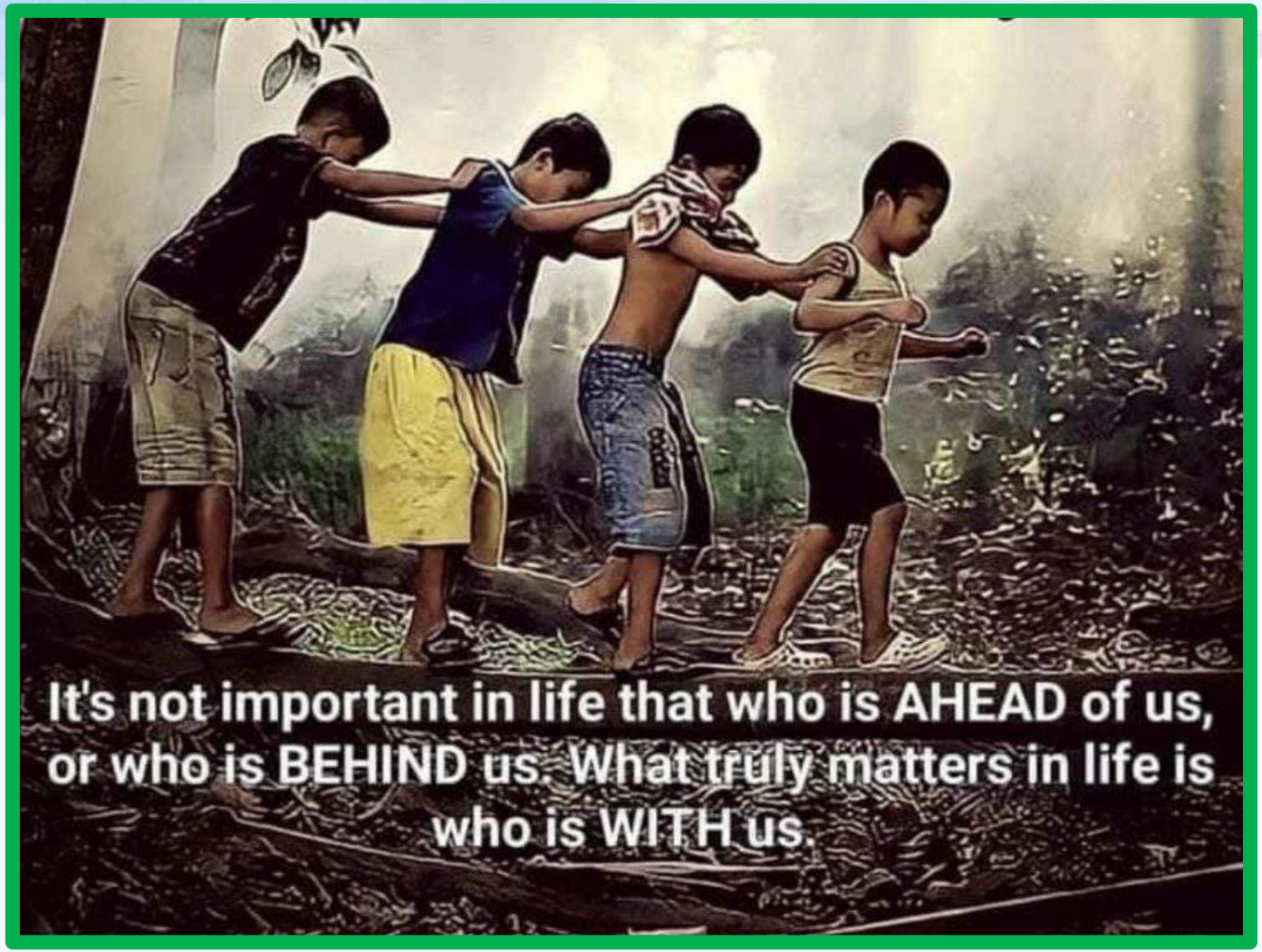

WE, THE SERRENDIP, INTEND TO CONTINUE OUR WORK THROUGH COLLABORATIONS, COOPERATION AND COEXISTENCE.